कुषाणकालीन कला की विशेषताएँ

अशोक कुमार 'अमर'*

प्राचीन भारत के विभिन्न प्रसिद्ध राजवंशों में कुषाण वंश का अपना विशेष स्थान रहा है। कुषाण वंश अपने वैभव एवं शक्ति में विशिष्ट स्थान रखता था। कुषाण काल में भारत ने आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के शिखर को छुआ। कुषाण वंशी शासकों के समय में जो प्रगति भारतवर्ष ने प्राप्त की, उसकी बराबरी इतिहास में बहुत कम देखने को मिलती हैं।

कला का मानव जीवन से गहरा संबंध होता है। किसी भी समाज की सभ्यता एवं विकास का ज्ञान कला से ही हो जाता है। कला संस्कृति का प्रमुख भाग है। कला विचारों को आगे बढ़ाने का एक साधन है। कला के माध्यम से मन के भाव प्रकट होतें हैं और उनमें स्थायीत्व आता है।

कुषाण शासक विदेशी होने पर भी भारतीय संस्कृति के रंग में रच गये थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति को प्रोत्साहन दिया। कुषाणों के समय में भारतीय संस्कृति का विकास हुआ। कनिष्क के काल में कला की विशेष उन्नति हुई, जिसमें मूर्तिकला, मुद्रा कला और स्थापत्यकला की गणना की जाती है।

मूर्तिकला–कुषाणकला मूर्तिकला का स्वर्णकाल कहा जा सकता है। कुषाणों के समय में मूर्तिकला के क्षेत्र में दो शैलियों की विशेष उन्नति हुई, जिसमें गांधार कला शैली और मथुरा कला शैली प्रमुख है।

(क) गांधार कला–कुषाण कला में गांधार एक ऐसा प्रदेश था जो कई सभ्यताओं की संगम स्थली थी। ''इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति ऐसी थी कि विदेशी आक्रांता, ईरानी, यूनानी, शक और कुषाण कभी इसी क्षेत्र में से भारत में प्रविष्ट हुए थे।[९1]

सम्राट अशोक द्वारा बौद्ध धर्म का प्रचार, मिनांडर में बौद्ध धर्म के प्रति प्रेम व कनिष्क द्वारा बौद्ध धर्म के राज्याश्रय के कारण इस प्रदेश में बौद्ध धर्म की जड़े मजबूत होनी स्वाभाविक ही थी। अतः परिणाम स्वरूप कुषाणकाल में गांधार प्रदेश में एक ऐसी मूर्ति शैली का जन्म हुआ जिसका विषय बौद्ध धर्म व शैली यूनानी थी, जिसे इतिहास में गांधार कला कहा जाता है।

***इतिहास विभाग, ल०न०मि०वि० दरभंगा**

गांधार प्रदेश बहुत ही प्रचीन है। इसका नाम साहित्यों में भी आया है। '' गांधार नाम अत्यंत प्रसिद्ध है, साथ ही प्राचीन भी। ऋग्वेद और अथर्ववेद में इसके इसी नाम का उल्लेख मिलता है।[९2] इसके अतिरिक्त महाभारत में राजा शकुनि के साथ इसके राज्य गांधार का भी वर्णन आता है।

गांधार कला ने कुषाण काल में अत्यंत विकसित कर कई स्थानों पर अपने केन्द्र स्थापित किये। ''गांधार स्कूल के मुख्य केंद्र अफगानिस्तान में जलालाबाद, स्वात घाटी में हैड्डा और पेशावर जिले में बामियान थे।[९3]

गांधार कला की विषय–वस्तु–इन मूर्तियों का विषय भारतीय तथा बौद्ध है परन्तु यूनानी शैली की छाप है। इसी कारण कुछ विद्वानों ने इसे हिन्द यूनानी बौद्ध कला का नाम दिया। गांधार कला के अंतर्गत निर्मित मूर्तियां बौद्ध–केंद्रो से उपलब्ध हुई है। गांधार कला की विषय–वस्तु में बुद्ध की मूर्तियों के अतिरिक्त बुद्ध के जीवन तथा उनके धर्म संबंधी प्रमुख घटनाओं को भी पत्थर फलकों पर प्रकट किया गया है, जैसे माया देवी की लुम्बिनी–यात्रा, बुद्ध जन्म, महाभिनिष्क्रमण, सम्बोधि, धर्म चक्र, प्रर्वतन, महापरिनिर्वाण, बौद्ध देवी–देवता, माया, गौतमी, मार, कुबेर आदि। वास्तव में गांधार कला का मुख्य विषय बुद्ध का जीवन ही है तथा उनके जीवन से संबंधित प्रमुख घटनाओं के दृश्य भी प्रदर्शित किए गए हैं।

विदेशी प्रभाव–गांधार कला पर विशेष रूप से यूनानी प्रभाव पड़ा व इसके अतिरिक्त ईरानी एवं रोमन शैलियों का भी प्रभाव पड़ा। ''गांधार कला की कृतियों की रचना के लिए यूनानी–रोमन कलाकारों को नियुक्त किया गया।[९4] महात्मा बुद्ध को विदेशी कपड़ों और वस्त्रों से सजाया गया है। सन्यास ग्रहण करते समय बुद्ध ने अपने बालों को मुण्डन करवा लिया था लेकिन मूर्तियों में उनके सिर पर बाल दिखाये गये हैं।

गांधार कला की विशेषताएं–गांधार कला शैली अपने आप में इतनी अधिक असाधारण विशेषताएँ लिए हुए है कि यह कला शैली भारत की अन्य कला शैलियों से अलग दिखाई देती है। गांधार शैली की जो मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं ''उनका संग्रह लाहौर और पेशावर के संग्राहालयों में किया गया है।[९5] इन मूर्तियों की विशेषताएं हैं जिनके आधार पर इनकी अपनी अलग पहचान है। इन मूर्तियों के निर्माण में मनुष्य के शरीर को यथार्थ चित्रित करते समय विशेष ध्यान दिया गया है। इस शैली में मानवीय माँसपेशियों, मूछों, लहरदार बालों को बड़ी बारीकी के साथ दिखाया गया है। महात्मा बुद्ध को यूनानी वेष–भूषा में दिखाया गया है, उनके पैरों में जूते हैं, प्रभावमंड़ल सादगी पूर्ण एवं सजावट रहित है और शरीर से बिल्कुल सटे अंग–प्रत्यंग दिखाने वाले अत्यंत बारीक वस्त्रों का अंकन हुआ है। उनके सिर पर घुँघराले बाल की मूर्तियाँ यूनानी देवता अपोलों जैसी लगती है। अतः गांधार कला

में तकनीक यूनानी व विषय भारतीय हैं। गांधार कला की प्रतिमायें काले स्लेटी पत्थर की बनी हैं।

गांधार कला की प्रमुख मूर्तियाँ

(अ) बुद्ध मूर्ति ष्‘6

इस मूर्ति में बुद्ध पालथी मारे शांत मुद्रा में बैठे दिखाये गये हैं। शरीर मांसल है। सिर पर जुड़ा बना हुआ है। माथे पर अर्णा है। नाक लम्बी है। वस्त्र शरीर से चिपका हुआ है। वस्त्रों की सिलबटें बड़ी बारीकी से दिखाई गई हैं।

(ब) तपस्या में लीन क्षीणकाय बुद्ध मूर्तिद ष्‘7

मुर्ति में महात्मा बुद्ध कठोर तपस्या में लीन दिखाये गये हैं। तपस्या की कठोरता से बुद्ध का शरीर अत्यंत कमजोर हो गया है। शरीर हड्डियों का ढ़ाँचा मात्र रह गया है। उनके अतीव कमजोर शरीर की हड्डियों को बड़ी कुशलता से दिखाया गया है। तपस्या में लीन बुद्ध के दोनों ओर दो मनुष्यों की टूटी हुई आकृतियां भी हैं।

गांधर कला शैली पर विदेशी प्रभाव होने के बाद भी यह भारत की श्रेष्ठ मूर्तिकला रही है। इस कला का मुख्य विषय बुद्ध है। यह बौद्ध धर्म के विस्तार में सहायक सिद्ध हुई। गांधार कला की सर्वोच्चता के कारण इसकी मूर्तियों का निर्माण व प्रसार सबसे अधिक हुआ। कला को विदेशी कला–समीक्षकों ने जिनमें इतिहासकार बी०ए० स्मिथ और सर जॉन मार्शल भी हैं, बहुत आदर दिया है।द ष्‘8

(ख) मथुरा कला–कुषाणकाल का दूसरा महत्वपूर्ण मूर्तिकला का केन्द्र मथुरा था। कनिष्क के समय में मथुरा कला का सर्वाधिक विकास हुआ। मथुरा के शिल्पकारों ने अपनी साधना के परिणामस्वरूप मूर्तिकला की स्वदेशी शैली का विकास किया, जो मथुरा–शैली के नाम से प्रसिद्ध है। मथुरा कला में सर्वधर्म समभाव दिखाई देता है। अतः सहिष्णुता मथुरा कला का आदर्श कहा जा सकता है। ‘‘बौद्ध, जैन तथा ब्राह्मण धर्म की मूर्तियाँ इस कला में समान रूप से निर्मित हुई।द ष्‘9 मथुरा में लाल बालु पत्थर का प्रयोग किया गया है।

विषय वस्तु–मथुरा शैली में कलाकार बुद्ध की मूर्तियों के साथ–साथ वैष्णव एव शैव मत के देवी–देवताओं तथा जैन धर्म के तीर्थकारों एवं कुषाण शासकों की मूर्तियों का भी निर्माण करते थे। इस कला का विषय केवल धार्मिक ही नहीं अपितु ऐतिहासिक भी था।

मथुरा कला की प्रमुख मूर्तियाँ

(अ) कनिष्क की मूर्ति द ष्‘10–कनिष्क की इस खंडित मूर्ति में सिर नहीं है किन्तु शरीर का शेष भाग है। उसे पूरी बाहों का कोट, पायजामा व भारी जूते, पहने हुए दिखाया गया है। कोट के ऊपर तक लंबा वस्त्र है। उसकी पोशाक को और भव्यशाली बना दिया है। उसके दांये हाथ में कलात्मक विशाल गुर्ज व बांये हाथ

में कलापूर्ण म्यान सहित खड़ग है।

(ब) तीर्थकर पार्श्वनाथ की मूर्ति द ष्‘10–मूर्ति में 23 वे तीर्थ कर पार्श्वनाथ जी के सिर पर सर्प–फणों को दिखाया गया है।द ष्‘11 मुर्ति सुंदर है।

बौद्ध धर्म की मूर्ति–सर्वप्रथम मथुरा में ही बुद्ध मूर्तियों का निर्माण किया गया। जहाँ इनके लिये पर्याप्त धार्मिक आधार था।द ष्‘12

महापरिनिर्वाण का दृश्य द ष्‘13–इसमें बुद्ध के महापरिनिर्वाण का करूण दृश्य उत्कीर्ण है। वे अपनी अंतिम अवस्था में तकिये पर सिर रख कर लेटे हुए हैं और उन्हें चारों ओर से शोकाकुल व्यक्तियों की भीड़ घेरे हुए है।

मथुरा के कलाकारों ने धार्मिक सहिष्णुता का ध्यान रखकर स्वदेशी तकनीक से जिस मथुरा शैली को जन्म दिया, वह अपने आप में गौरव की बात है। इस शैली की मूर्ति सादगी से परिपूर्ण है। मथुरा की कला ने देश में प्रचलित सभी धर्मों व ऐतिहासिक मूर्तियों का निर्माण कर सिद्ध कर दिया की कला किसी एक धर्म या वर्ग की नहीं हो सकती है।

मुद्रा कला–कुषाणों के समय में महत्वपूर्ण मुद्रा सुधार का कार्य किया गया। कुषाण शासकों के समय में भारत की आर्थिक उन्नति हुई। उनके समय में विदेशी व्यापार भी बढ़ा। व्यापारिक लेन–देन में निश्चित माप के सिक्कों की जरूरत अनुभव की गई, अतः कुषाण शासकों ने महत्वपूर्ण मूद्रा सुधार कर विभिन्न धातुओं जैसे सोना, चाँदी एवं ताम्र सिक्कों का प्रचलन किया।

इस प्रकार कुषाण काल के सिक्के पूर्ववर्त्ती शासकों के सिक्कों से अच्छे एवं उत्तरवर्ती शासकों के लिए आदर्श थे। ‘‘यद्यपि उत्तर–पश्चिम भारत में स्वर्ण सिक्कों का प्रचलन यवन राजाओं ने करवाया तथापि इन्हें नियमित एवं पूर्णरूपेण प्रचलित करने का श्रेय कुषाण राजाओं को ही दिया जा सकता हैद ष्‘14

कुषाण कालीन प्रमुख सिक्के

(अ) कनिष्क के सिक्के–कनिष्क के समय के सिक्के भारत के विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए हैं। ‘‘स्वर्ण सिक्के तौल में रोमन सिक्कों (लगभग 124 ग्रेन) के बराबर है।द ष्‘15

सिक्के में खड़ी हुई मुद्रा में कनिष्क की आकृति अंकित है। वह लम्बा कोट, पायजामा व टोपी घारण किए हुए है। पैरों में लम्बे जूते पहने हुए है। बायें हाथ में भाला लिये हुए है व दांये हाथ से हवन कुण्ड में आहुति दे रहा है। ‘‘कुछ सिक्कों के पृष्ठ भाग पर चतुर्भुजी शिव की आकृति तथा यूनानी भाषा में ‘‘आइसो’’ (शिव) अंकित है। हाथ में त्रिशुल, बकरा, डमरू तथा अंकुश है। किसी–किसी सिक्के पर प्रभावमंडल युक्त खड़ी मुद्रा में बुद्ध प्रतिमा तथा उसके नीचे यूनानी लिपि में ‘बोडो’ (बुद्ध) खुदा हुआ है।द ष्‘16

हुविष्क के सिक्केध ष्ट'17– हुविष्क के स्वर्ण सिक्के में राजा के शरीर की आधी आकृति दिखाई गई है। यह टोप व सुन्दर कोट धारण किए हुए है। वह दायें हाथ में दंड व बांये हाथ में अंकुश पकड़े हुए हैं।

कुषाण काल के सिक्कों से ततकालीन उच्च आर्थिक स्थिति तत्कालीन ध ार्मिक सहिष्णुता व सांस्कृतिक स्थिति आदि की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

इस प्रकार कुषाण शासकों ने मुद्रा सुधार कर, मुद्रा निर्माण के क्षेत्र में एक नयी प्रणाली को जन्म दिया। कुषाण कालीन मुद्रा कला ने आने वाले युग के लिए उदाहरण का काम किया था।

स्थापत्य कला–कुषाण काल में स्थापत्य कला का भी विकास हुआ। प्रसिद्ध कुषाण शासक कनिष्क एक महान स्थापत्य कला का निर्माता भी था। ''उसने अपनी राजधानी पुरूषपुर में 400 फीट ऊँचा 13 मंजिलों का टावर बनवाया था। इसके ऊपर एक लौह छत्र स्थापित किया गया था उसी के पास में एक विशाल में संघाराम निर्मित किया गया था। यह संघाराम जो 'कनिष्क चैत्य' कहा जाता था, सम्पूर्ण बौद्ध जगत में प्रसिद्ध था इसका निर्माण यमन वास्तुकार अगिलस द्वारा किया गया था। इसके अतिरिक्त कनिष्क ने कश्मीर में कनष्कपुर (वर्त्तमान कान्सपोर) तथा तक्षशीला में सिरकप नामक स्थान पर एक नये नगर का निर्माण करवाया था।ध ष्ट'18

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. पाल, एस. एन. : भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास, पृ० 132
2. चन्द, जगदीश : कला के प्राण बुद्ध, पृ० 89
3. महाजन, विद्याधर : प्राचीन भारत का इतिहास, पृ० 428
4. महाजन, विद्याधर : पूर्वोद्धत, पृ० 428
5. श्रीवास्तव के०सी० : प्राचीन भारत का इतिहास तथा सांस्कृति, पृ० 374
   चन्द्र, जगदीश : कला के प्राण बुद्ध, पृ० 88–89
6. मीत्तल, प्रभुदयाल : ब्रज की कलाओं का इतिहास, पृ० 140
7. चन्द्र, जगदीश : पूवोद्धत, 1956, पृ० 95
8. शर्मा, श्याम : प्राचीन भारतीय कला, वास्तुकला एवं मूर्तिकला, पृ० 70
   मीत्तल, प्रभुदयाल : पूवोद्धत, 1977, पृ० 109
9. वही, पृ० 133
10. श्रीवास्तव के०सी० : 2004, पूवोद्धत, पृ० 375
11. मीत्तल, प्रभुदयाल : पूवोद्धत, 1977, पृ० 140
12. श्रीवास्तव के०सी० : पूवोद्धत, 2004, पृ० 280
13. वही, पृ० 382

14. श्रीवास्तव के०सी० : पूवोद्धत, 2004, पृ० 382
15. कोसम्बी, दामोदर धर्मानंद : पूवोद्धत, पृ० 160–161
16. श्रीवास्तव के०सी० : पूवोद्धत, 2004, पृ० 373

सहायक ग्रंथ–सूची

1. जगदीश चन्द्र, कला के प्राण बुद्ध, नागपुर–1956
2. प्रभुदयाल मीत्तल, ब्रज की कलाओं का इतिहास, दिल्ली–1977
3. के०सी० श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा सांस्कृति, इलाहाबाद–2004
4. वासुदेव शरण अग्रवाल, भारतीय कला (वाराणसी–1966)
5. लोकेश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, मेरठ 2005
6. विद्याधर महाजन, प्राचीन भारत का इतिहास, नई दिल्ली–1989
7. ए०के०मित्तल, भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, आगरा–1997
8. दामोदर धर्मानंद कोसम्बी, प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, नई दिल्ली–1977
9. एस. एन. पाल, : भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का इतिहास, जयपुर 1968
10 बी०एन०लुणिया, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास, आगरा 2001
11. श्याम शर्मा, प्राचीन भारतीय कला, वास्तुकला एवं मूर्तिकला